IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बीकानेर जिले के कृषिगत भूमि उपयोग का अध्ययन

शौफीन

शोद्यार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

शोध प्रश्न पत्र

बीकनेर जिले का कृषि भूमि उपयोग परिचयः

मानव की आर्थिक क्रियाओं में से कृषि एक ऐसी आर्थिक क्रिया है जिसका पृथ्वी के धरातल पर सबसे अधिक विस्तार पाया जाता है। बीकानेर जिला जो राजस्थान के उत्तर पश्चिम दिशा में फैला हुआ है जिसका विस्तार 27°11′ से 29°3′ उत्तरी अंक्षाश व 71°54′ से 74°22′ पूर्वी देशान्तर तक है। इस जिले का अधिकतर भूभाग रेतीला है। यहां पर कोई भी नदी नही होने के कारण यहां की फसले वर्षा पर ही निर्भर रहती है। बीकानेर जिले की निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भरण–पोषण तथा जीवन की गुणवत्ता हेतु भूमि एवं जल संसाधनों के अनुकूल प्रबंधन की प्रक्रिया को अपनाकर कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अधिक उपयोगी बनाया जा सकता हैं। मानव भूमि उपयोग अपने विभिन्न भौतिक, सामाजिक व आर्थिक कार्यों के लिए करता है।

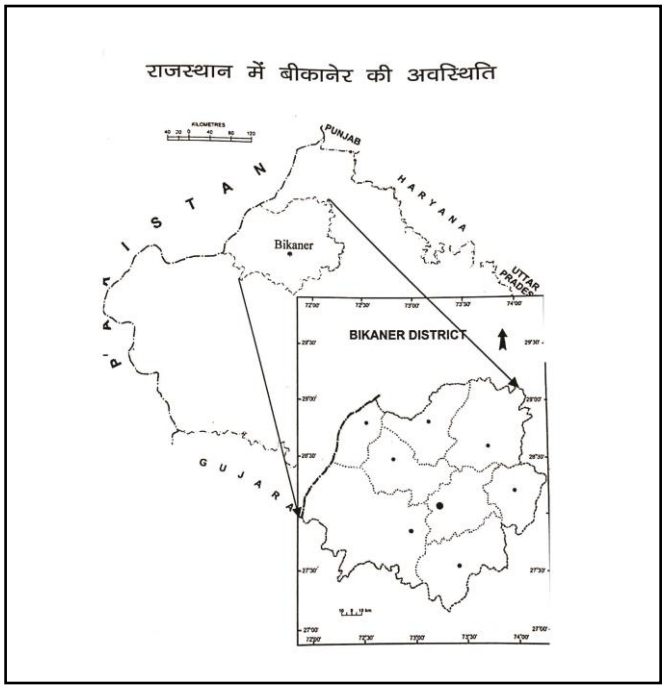

भूमि उपयोग का प्रभावित करने वाले कारक :

भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों को हम दो समूहों में रख सकते है –

पहला समूह भौतिक कारकों का जो कि मानव की सीमाओं से बाहर का है।

दूसरा समूह सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक उपद्देश्यों व कार्यों द्वारा परिसीमित होता है। भौतिक कारकों में विशेषकर किसी क्षेत्र की कृषिगत भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में धरातल, तापमान, आर्द्रता, मिट्टी उर्वकता आदि है।

भूमि उपयोग विश्लेषण कृषि सांख्यिकी तकनीकी कमेटी ने कृषि मन्त्रालय एवं खाद्य विभाग के सहयोग से विकसित भूमि उपयोग को 9 भागों में विभक्त किया गया है। यह वर्गीकरण मुख्य रूप से क्षेत्र विशेष में विद्यमान वन क्षेत्र, कृषि योग्य भूमि, बंजर भूमि, अकृषिगत भूमि, ऊसर भूमि, स्थाई चारागाह, गोचर भूमि, शुद्ध बोया गया क्षेत्र आदि के आधार पर वास्तविक उपयोग दिखाया गया हैं।

(हैक्टेयर में)

क्र. स.	वर्ष	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	वन क्षेत्र	अकृषिगत भूमि क्षेत्र	स्थाई चारागाह एवं गोचर भूमि, वक्षों का समूह एवं बाग	कृषि योग्य बंजर भूमि	पड़ती भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र
1.	2004–05	3038215	82463	253539	52729	736961	599335	1275571	88775
2.	2014–15	3041753	94650	272941	50608	641905	368110	1586130	342233

आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर (2004–05, 2014–15)

देश में वर्ष 1948 में ही कृषि मन्त्रालय के अधीन एवं सांख्यिकी विभाग स्थापित किया गया। अध्ययन क्षेत्र बीकानेर जिले में वर्ष 2005 से 2015 में कृषि भूमि उपयोग में आये परिवर्तन को दिखाया गया है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्र : बीकानेर जिले में वर्ष 2004–05 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1275571 हैक्टेयर (41.98%) भाग के अन्तर्गत था तथा 2014–15 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 1586130 (52.14%) हो गया। वर्ष 2004–05 की तुलना में 2014–15 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र कुल मिलाकर बढ़ा है इसका कारण बीकानेर जिले में इन्दिरा गांधी नहर से सिंचाई सुविधा में विकास होना व बंजर व बिना बोई गई भूमि को भी सिंचाई के द्वारा उपयोग में लाया जा रहा है। भविष्य को देखते हुए मानवीय संसाधनों की वृद्धि पर अंकुश हेतु व्यवहारिक व कारागार उपायों का क्रियान्वयन अपिहार्य है।

पड़ती भूमि : बीकानेर जिले में इन्दिरा गांधी नहर परियोजना व लिफ्ट से सिंचाई में प्रगति हुई है जिसमें पड़ती भूमि के क्षेत्रफल में कमी आयी है। बीकानेर पश्चिमी मरूस्थली हिस्सा होने के कारण यहां की मिट्टी में उर्वरक क्षमता कम देखी गई है। अतः उर्वरा शक्ति को बनाये रखने के लिए भूमि को पड़ती छोड़ना आवश्यक हैं। अध्ययन क्षेत्र बीकानेर जिले में वर्ष 2004–05 में पड़त भूमि का क्षेत्रफल 599335 हैक्टेयर (19.72%) थी जो वर्ष 2014–15 में घटकर 368110 हैक्टेयर (12.10%) हो गया।

अकृषिगत भूमि : अकृषिगत भूमि का उपयोग आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है जैसे अधिवास, परिवहन साधन, उद्योग, बाजार एवं सांस्कृतिक साधनों हेतु किया जाता है। बीकानेर की लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास निर्माण नगरों का विस्तार वनों का विस्तार के कारण अकृषिगत भूमि क्षेत्रफल बढ़ा है।

अध्ययन क्षेत्र बीकानेर जिले में वर्ष 2004–05 में अकृषिगत भूमि का क्षेत्रफल 253539 हैक्टेयर (8.34%) था। वही वर्ष 2014–15 में अकृषिगत भूमि का क्षेत्रफल बढ़कर 272941 हैक्टेयर (8.9%) हो गया। अध्ययन क्षेत्र में अकृषिगत क्षेत्र में बढ़ोतरी इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि बढ़ती जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ती हुई मांग के कारण भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है।

स्थाई चारागाह भूमि : राजस्थान राज्य में कृषि कार्यों के साथ–साथ पशुपालन एक प्रमुख उद्योग है। आर्थिक विकास में पशुपालन महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। पशुधन अर्थ व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए एक संसाधन के रूप में हमेशा से ही बेहतर रहा है। बीकानेर जिले में 2004–05 में स्थाई चारागाह व गोचर भूमि का क्षेत्रफल 52729 हैक्टेयर (1.77%) था। वही वर्ष 2014–15 में इसकी तुलना स्थाई व गोचर भूमि में कमी देखी गयी जो घटकर 50608 हैक्टेयर (1.66%) रह गई। इसका मुख्य कारण स्थाई चारागाहों एवं गोचर भूमि का सरकारी आवंटन चारागाह में कमी आ रही है।

निष्कर्ष : अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारको में भौतिक कारक व आर्थिक उद्देश्यों के कार्य रहे है। बीकानेर जिले का धरातलीय स्वरूप मरूस्थलीय है। पिछले 5 दशकों के भूमि उपयोग के स्थानिक, सामायिक प्रतिरूप विश्लेषण अत्यधिक परिवर्तन को इंगित करता है। बीकानेर जिले में संसाधन सिमित है अतः उपलब्ध संसाधनों, विशेष रूप से भूमि व जल संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग किया जा रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या की मांगों की पूर्ति को देखते हुए प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का योजनाऐं बनाकर प्रबन्धन किया जाना चाहिए जिससे आने वाले पढ़ी को भूमि उपयोगिता के प्रति विलम्ब न हो।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर 2004–05, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर (राज.)।
2. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर 2015, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, जयपुर (राज.)।
3. डॉ. कुमार प्रमिला एवं डॉ. शर्मा, श्रीकमल (1996), कृषि भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
4. मजिद हुसैन(2000).कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान।
5. डी.एस. श्रीवास्तव (1993) कृषि के परिवर्तनशील प्रतिरूपों का भूगोलिक अध्ययन, नई शाहजपुरा जनपद, क्लासिकल पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
6. मोधे, बसंत व जैन (1985) राजस्थान में कृषि विकास, राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. सक्सेना, हरिमोहन (2020), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।